जय गिरिजापति दीनदयाला ।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुण्डल नागफनी के ॥
अंग गौर सिर गंग बहाये ।
मुण्डमाल तन क्षार लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै ।
छवि को देखि नाग मुनि मोहै ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मैना मातु कि हवै दुलारी ।
वाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥
नंदि गणेश सोहैं तहँ कैसे ।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ ।
Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri
या छवि को कहि जात न काऊ ॥

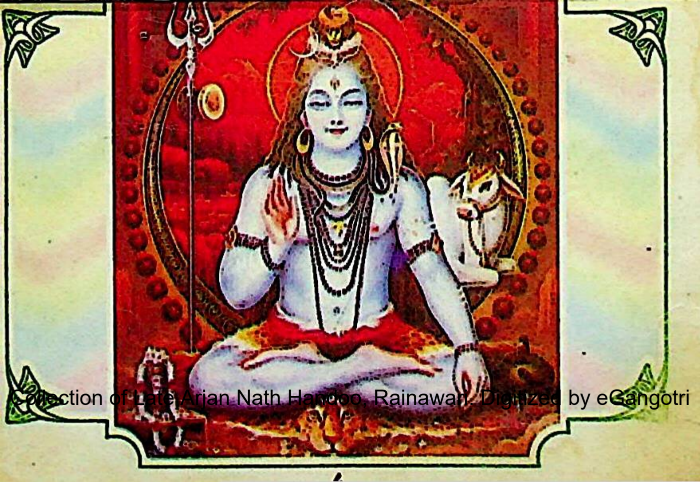

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

देवन जबहीं जाय पुकारा ।
तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा ॥
कियो उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥
तुरत षडानन आप पठायउ ।
लव निमेष महँ मारि गिरायउ ॥
आंप जलंधर असुर संहारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri
सबहिं कृपा करि लीन बचाई ॥

किया तपहिं भागीरथ भारी ।
पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ।
सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥
वेद माहि महिमा तव गाई ।
अकथ अनादि भेद नहीं पाई ॥
प्रकटी उदधि मथन ते ज्वाला ।
जरत सुरासुर भए बिहाला ॥
कीन्ह दया तहँ करी सहाई ।
नीलकंठ तब नाम कहाई ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पूज़न . रामचन्द्र जब कीन्हा ।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥
सहस कमल पूजन चित धारी ।
लीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
एक कमल प्रभु राखेउ गोई ।
कमल नैन पूजन चहँ सोई ॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।
करत कृपा सबके घटवासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं ।
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारों ।
यहि अवसर मोहि आन उबारो ॥
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
संकट तें मोहि आन उबारो ॥
मात-पिता भ्राता सब होई ।
संकट में पूछत नहीं कोई ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।
आय हरहु मम संकट भारी ॥
धन निर्धन को देत सदाहीं ।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी ।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
शंकर हो संकट के नाशन ।
विघ्न विनाशन मंगल कारन ॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावें ।
नारद शारद शीश नवावें ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देउ अभय वरदान।।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

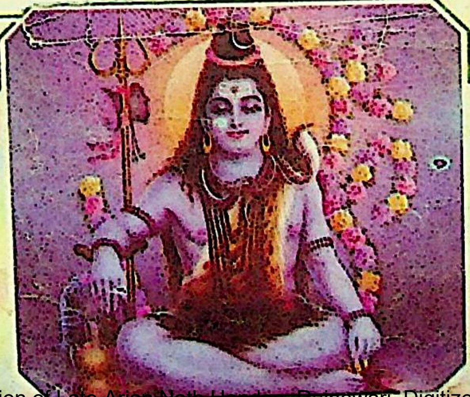

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अथ श्री शिव चालीसा

नमो नमो जय नमः शिवाय ।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥
जो यह पाठ करे मन लाई ।
ता पर होत हैं शम्भु सहाई ॥
ऋणियां जो कोई हो अधिकारी ।
पाठ करे सो पावनहारी ॥
पुत्र होन इच्छा कर कोई ।
निश्चय शिव प्रसाद ते होई ॥
पण्डित त्रयोदशी को लावै ।
ध्यान पूर्वक होम करावै ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्रयोदशी व्रत रहे हमेशा।
तन नहिं ताके रहै कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावै॥
जन्म-जन्म के पाप नसावै।
अन्त धाम शिवपुर में पावै॥
कहत अयोध्या आस तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करें चालीस। तुम मेरी मनकामना, पूर्ण करो जगदीश।
मंगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत् चौसठ जान। अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन्ह कल्याण॥

अथ शिव स्तुति

श्री गिरजापति वन्दिकर, चरण मध्य शिरनाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मो पर होहु सहाय॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नंदी की सवारी नाग अंगीकार धारी,
नित संत सुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं ।
गले मुण्डमाला धारी सिर सोहे जटाधारी ,
वाम अंग में बिहारी गिरिराज सुतवारी हैं ॥
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी कर त्रिशूल शूल धारी हैं ।
कला उजियारी लाल देख सो निहारी,
यश गावें वेदचारी सो हमारी रखवारी हैं ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शम्भु बैठे हैं विशाला भंग पाँव सा निराला,
नित रहें मतवाला अहि अंग पै चढ़ाये हैं।
गल सोहे मुण्डमाला कर डमरू विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाये हैं ।
संग सुरभी सुतशाला करें भक्त प्रतिपाला,
मृत्यु हरें हैंअकाला शीश जटा को बढ़ाये हैं ।
कहैं रामलाला मोहि करो तुम निहाला काटो,
बिपति कसाला जैसे काम को जलाये हैं।।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मारा है जलंधर और त्रिपुर को संहारा जिन,
जारा है काम जाके शीश गंगधारा है।
धारा है अपार जासु महिमा है तीनों लोक,
भाल में है इन्दु जाके सुषमा की सारा है ॥
सारा है बात सब पायो हलाहल जिन,
भक्त के अधारा जाहि वेदन उचारा है ॥
द्वारा है भाग जाके द्वार हैं गिरीश कन्या,
कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अष्ट गुरु ज्ञानी जाके मुख वेदबानी,
सोहै भवन भवानी सुख सम्पत्ति लहा करें।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै,
दासन के दास जाके दारिद दहा करें।
चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी,
कहत कवि अनन्दी नर नाहक ह हा करें।
जगत रिसाय यमराज की कहा बसाय,
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करें॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सवैया- गौर शरीर में गौर विराजत,
मोर जटा सिर सोहत जाके ॥
नागन के उपवीत लसें सो, अयोध्या
कहे शशि भाल में ताके ॥
दान करै पल में फल चारि,
औ टारत अंक लिखे बिधना के ।
शंकर नाम निःशंक सदा हि,
भरोसे रहैं निशिवासर ताके ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मंगसर मास हेमन्त ऋतु, षष्ठी तिथि शुभ बुद्ध ।
कहत अयोध्यादास तुम, शिव के विनय समुद्ध ॥

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥
Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri
एतेषां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति ।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वरः ॥५॥

श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।१।
मन्दाकिनी सलिल चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ।२।
शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृष ध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।३।
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।४।
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।५।
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते ।६।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ भूर्भुवः स्वः सः जूं हौं ॐ

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूपं ।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ।।
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।।
चिदानंद संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।
Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये । ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।